रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव



## व्यक्ति - व्यक्ति के लिए भाषा का उपयोग

(क) एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से भाषिक सम्बन्ध प्राय: सामाजिकता के निर्वाह की भावना से प्रेरित होता है। रास्ते में किसी से भेंट होने पर हम यह बैठते हैं- कहिए- कुशल तो है? वस्तुत: उसके कुशल में हमारी कोई खास दिलचस्पी नहीं होती। वह भी उत्तर देता है, हाँ' सब आपकी दया से ठीक है' तो उपचार मात्र का पालन करता है। सम्भव है, उस समय उसके मन में कोई उलझन या समस्या, कष्ट या द्वंद्व हो मगर वह हमसे कहना नहीं चाहता। रहीम की यह सीख-

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥

बहुत बार हमें अपने मन की बात दूसरों से न कहने को बाध्य करती है और उपचार का उत्तर हम उपचार से दे देते हैं। इसी तरह जाने की अनुमति माँगने पर अतिथि का जाना मनसा अभिमत होते हुए भी हम ऊपर से कहते हैं- अरे, कल ही तो आये हैं। अभी जाने की क्या जल्दी है? दो-चार दिन ठहरिए तो जाइएगा।' अनुमति माँगते ही जाने की स्वीकृति दे देना उदासीनता का परिचायक माना जाता है।

किसी के काम कर देने पर धन्यवाद-ज्ञापन, कोई भूल हो जाने पर खेद-प्रकाश किसी अपरिचित से कुछ पूछते समय 'क्षमा कीजिएगा' की भूमिका के साथ प्रश्न करना सामाजिक शिष्टाचार होती है। इसीलिए हमें प्रतिदिन हजारों निरर्थक ध्वनियों का उच्चारण करना पड़ता है। उसमें समय और श्रम का अपव्यय भले ही हो पर शिष्टता के निर्वाह के लिए वह आवश्यक होता है।

(ख) एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के भाषिक सम्पर्क का अवसर सामान्य वार्तालाप के द्वारा भी उपस्थित होता है। दो व्यक्ति घंटों किसी विषय पर बात-चीत करते हैं, जो विचार-विमर्श कर रहे हों या यों ही समय काटने के लिए गप्प लड़ा रहे हों।

(ग) किसी को किसी कार्य के लिए निर्देश देना भी इसी श्रेणी में आ जाता है। उदाहरणार्थ तुम अभी यह काम कर डालो' तुम आज शाम की गाड़ी से दिल्ली चले आओ' आदि वाक्य व्यक्ति-व्यक्ति की सीमा में ही आते हैं।

(घ) भाव या विचार व्यक्त करने के लिए, जैसे खीझ, क्रोध, असहमति आदि सूचित करने के प्रसंग में भी, व्यक्ति का व्यक्ति से भाषिक व्यवहार होता है। किसी की राय जानने के समय भी यही स्थिति रहती है।

इस प्रकार भाषा की तीन स्थितियाँ व्यक्ति की अपने-आप से, व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से और व्यक्ति की समाज से स्पष्ट हो जाती हैं और भाषा की व्यापकता का बोध हो जाता है। भाषा के अभाव में मनुष्य की सामाजिक ही नहीं, वैयक्तिक स्थिति भी निरुपयोगी बन जाती है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
(बक्सर-बिहार)